Chhatrapati Shahu Ji Maharaj
University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 11812798

Roll No. 24040000008
Total Mark 64/75.00
Exam MA-III_ODD_EXAM_NOV_2025
Subject A020902T - Sanskrat Vyakran

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	4/5	6	14/15				
1B	4/5	7	0/15				
1C	4/5	8	0/15				
1D	4/5	9	0/15				
1E	4/5						
1F	4/5						
1G	4/5						
1H	4/5						
1I	4/5						
2A	0/7						
2B	0/7						
2C	0/7						
3A	0/7						
3B	0/7						
3C	0/7						
4	14/15						
5	0/15						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

PART-I

Date of Exam: 12-11-25 Shift: IIIrd Room No.: 12

Paper Code: A020902T Subject: संस्कृत व्याकरण Sem.: IIIrd

Name of Candidate: SHANYA AGNIHOTRI

Roll No.: 2 4 0 4 0 0 0 0 0 8

Signature of Candidate: Shanya Agnihotri

Signature of Invigilator

COE Facsimile

PART-II

MARKS OBTAINED

Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures | Max. Marks

Total Marks in Words

A020902T
Paper Code

Signature of Evaluator

PART-III

Course: M.A.

Session: 2025-26 ~~Year~~ Semester: IIIrd

Subject: संस्कृत व्याकरण

Paper Code: A 0 2 0 9 0 2 T

Exam Date: 1 2 - 1 1 - 2 0 2 5

Name of Candidate: S H A N Y A A G N I H O T R I

Father's Name: O N K A R A G N I H O T R I

महाविद्यालय का कोड College Code: F B 0 1

परीक्षा केन्द्र का कोड Exam Centre Code: F B 0 1

परीक्षा का प्रकार Type of Exam: संस्थागत Regular ● / भूतपूर्व परीक्षार्थी Ex. Student ○ / व्यक्तिगत Private ○ / बैक पेपर परीक्षा Back paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.

11812798

A020902T
Paper Code

PART-IV

नामांकन संख्या Enrollment Number: C S J M A 2 1 0 0 1 4 4 4 8 2

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number: 2 4 0 4 0 0 0 0 0 8

पेपर कोड Paper Code: A 0 2 0 9 0 2 T

Shanya Agnihotri
Signature of Candidate

Signature of Invigilator

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट : 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पन्ने के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें।
2. बॉक्स में भरी जाने वाली प्रविष्टियाँ बायीं तरफ से शुरू की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बॉलपेन से भरा जायें।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below blacken the circles completely.

4. Make no Stray marks on this sheet.
5. **DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.**

IN ORDER TO AVOID UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/ electronic watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

अनुचित साधन से बचने हेतु:

1. उत्तर पुस्तिका के निर्देशित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कही और न लिखे तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, कॉपी, पुस्तक यह सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लैस साइंटफिक कैल्कुलेटर ले जाने की अनुमन्यता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रूपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र कोड सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृष (1–24) से कम है या फटे हुए है, तो परीक्षा शुरू होने के पूर्व दूसरी उत्त पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश्न में कोई त्रुटि है तो उसके परीक्षा शुरू होने के 30 मिनट के अन्दर कक्ष निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पैंसिल का प्रयोग न करें।
10. B कॉपी या अतिरिक्त ग्राफ नहीं दिया जायेगा।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Pape Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-32) or any other kind of damag in your answer script, if found than change the answer scrip immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g Subject Code, Subject Name and Question of the Questio Paper during first THIRTY MINUTES of the commencement o the exam, so that it can be corrected in TIME. After that no corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over paper should fill in status as Carry Over. Those appearing as Ex Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

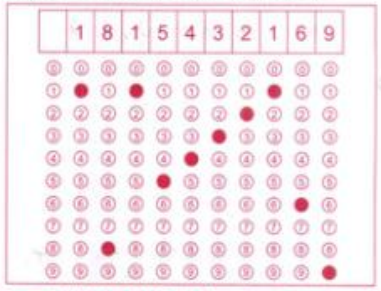

Note - If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three column

Paper Code

उत्तर-1 (B) "महाभाष्य" पतञ्जलि मुनि की कृति है जो संस्कृत व्याकरण शास्त्र के प्रमुख ग्रन्थों में परिगणित है।

यह ग्रन्थ पाणिनि कृत "अष्टाध्यायी" तथा कात्यायन के "वार्तिक" का स्पष्टीकरण है।

'महाभाष्य' का अर्थ है – महान व्याख्या।

⇒ महाभाष्य में आह्निक :-

'महाभाष्य' का विभाजन 'आह्निक' में है।

आह्निक का अर्थ होता है –
"अह्ना निवृतम् आह्निकम्।"
अर्थात्,
जो एक दिन में पढ़ा जाए, वो 'आह्निक' है।

⇒ महाभाष्य में आह्निकों की संख्या 1 + 84 है।
यहाँ 1 + 84 लिखने का अर्थ है –

कुछ विद्वान महाभाष्य के "पस्पशाह्निक" को आह्निक की संख्या के अन्दर नहीं गिनते हैं।
'पस्पशा' का अर्थ होता है –
'प्रस्तावना', 'आमुख', 'कथावस्तु'

इस प्रकार,
'महाभाष्य' के प्रथम आह्निक में (पस्पशा-आह्निक) में किसी सूत्र (पाणिनि कृत) की व्याख्या या स्पष्टीकरणादि नहीं दिया है यह एक भूमिका के रूप में है।
अतः इसे कुछ विद्वान् आह्निक के रूप में नहीं

Do Not write anything in this Portion

Paper Code

मिलते हैं।

उत्तर-1-(C) संस्कृत व्याकरणाचार्य में अन्यतम स्थान पर स्थित महान आचार्य ~~पाणिनि~~ पतञ्जलि ने आदि व्याकरणाचार्य पाणिनि की कृति 'अष्टाध्यायी' के नियमों, सूत्रों आदि को सरल रूप में प्रस्तुत करते हुए अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'महाभाष्य' की रचना की।

महाभाष्य का अर्थ :-

'महाभाष्य' का शाब्दिक 'अर्थ है - "महान् भाष्य"।

इस प्रकार,
पतञ्जलि ने अपने ग्रन्थ में अष्टाध्यायी के गूढ सूत्रों को सरल एवं स्पष्ट तथा व्यवस्थित रूप प्रदान करते हुए उनकी व्याख्या की।

महर्षि पतञ्जलि पाणिनि की विरोधाभास एवं शंका का समाधान प्रस्तुत करते हुए अनेक उदाहरणों को प्रस्तुत करके उसे लोक-व्यवहार के अनुरूप बनाया।

सरल शब्दों में,
अष्टाध्यायी के गूढ अर्थों को सरल रूप में प्रस्तुत करने के लिए इन्होंने अनेक लौकिक उदाहरणों को ~~चित्र~~ वर्णन करते हुए उसकी महान व्याख्या की।

03 (5)

उत्तर -1 (D) महाभाष्य पतञ्जलि की एक अमरकृति है। इसमें शब्द की परिभाषा उसके लक्षणादि का उल्लेख है।

महाभाष्य पाणिनि की अष्टाध्यायी और कात्यायन के वार्तिक पर आधारित है।

इसके प्रमुख टीकाकार हैं —

1. कैयट आचार्य
2. जगन्नाथ आचार्य

उत्तर - 1(E) महाभाष्य पतञ्जलि की महान, लोकप्रिय एवं सर्वप्रसिद्ध कृति है।
यह पाणिनि के 'अष्टाध्यायी' एवं कात्यायन के वार्तिक' पर आधारित है।

विषय- वस्तु :- 'महाभाष्य' की विषय- वस्तु इस प्रकार है —

• अष्टाध्यायी पर आधारित :- 'अष्टाध्यायी' में सूत्र अत्यन्त संक्षिप्त तथा गूढ अर्थ के हैं। पतञ्जलि मुनि ने 'अष्टाध्यायी' के लगभग 1700 श्लोकों को लेकर 'महाभाष्य' की रचना की।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

6

04

• शब्द की परिभाषा :-

पतञ्जलि ने "अथ शब्दानुशासनम्" कहकर शब्दों की परिभाषा बतायी है —

"प्रतीतपदार्थको लोके सः ध्वनिः शब्दः इति उच्यते।"

• शब्दार्थ सम्बन्ध :-

महर्षि पतञ्जलि ने शब्द और अर्थ में सम्बन्ध स्थापित करते हुए उन्हें नित्य बताया है —

शब्दः सिद्धः च।

• व्याकरण अध्ययन के प्रयोजन :-

महामुनि ने व्याकरण के अध्ययन के प्रयोजन / उद्देश्य बताए हैं अर्थात् व्याकरण के अध्ययन की क्या आवश्यकता है। उन्होंने पाँच मुख्य प्रयोजन बताएं —

'रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः।'

1- रक्षा 2- ऊह
3- आगम 4- लघु (सुगमता)
5- असन्देह

इसके अतिरिक्त 13 गौण प्रयोजन भी बताए हैं।

इस प्रकार,

पतञ्ज[illegible] महाभाष्य शब्द तथा अर्थ की स्पष्ट[illegible] हुआ . व्याकरणाध्ययन के

प्रयोजन का वर्णन करता हुआ अष्टाध्यायी को सरल रूप में प्रस्तुत करता है।

उत्तर-1(F) महाभाष्यकार पतञ्जलि ने सर्वप्रथम 'गौः' शब्द का लक्षण स्पष्ट करते हुए तत्पश्चात् सभी शब्दों का लक्षण बताया है —

"प्रतीतपदार्थको लोके ध्वनिः स शब्दः इत्युच्यते।"

अर्थात्,
जो ध्वनि लोक में पदार्थ की प्रतीति कराती है वह ही शब्द है।

इस प्रकार,
वैयाकरणों ने ध्वनि ही शब्द है — यह माना है।

उदाहरण के रूप में,

- 'शब्दं कुरु'।
  शब्द करो / ध्वनि करो।

- 'मा शब्दं कार्षीः'।
  शब्द मत करो / ध्वनि मत करो।

- 'शब्दकार्ययं माणवकः'।
  यह शब्दकारी / ध्वनि करने वाला माणवक है।

इस प्रकार,
उपर्युक्त उदाहरण में,
जो व्यक्ति शब्द / ध्वनि कर रहा है उसे ही कहेंगे की ध्वनि करो या ना करो या वह शब्द करी है।

Do not write anything in this margin

Do Not Write anything in this Portion

इस प्रकार,
वैयाकरण ने ध्वनि को ही शब्द माना है।

उत्तर-1(ग) महाभाष्यकार पतञ्जलि ने अपने ग्रन्थ में पाँच मुख्य प्रयोजन तथा 13 गौण प्रयोजन बताये हैं कि हमें व्याकरण का अध्ययन क्यों करना चाहिए।

"प्रायश्चित्तीया मा भूमेत्यध्येयं व्याकरणम्।"

उपर्युक्त पंक्ति,
पतञ्जलि मुनि ने गौण प्रयोजन के अन्तर्गत 'सारस्वतीम' प्रयोजन में रखी हैं, इस का अर्थ है -

"हमें प्रायश्चित न करना पड़े इसलिए हमें व्याकरण का अध्ययन करना चाहिए।"

स्पष्ट रूप में,
याजक ने हवन कुण्ड का निर्माण कर लिया है तथा अग्नि भी प्रज्जवलित कर ली है तब वह अपशब्द का उच्चारण करता है या गलत वेदमंत्रो का उच्चारण करता है तो उसे "सारस्वतीम" नामक याग करके प्रायश्चित करना पड़ता है इसलिए हम अनुचित / अपशब्द का उच्चारण न करें इस लिए हमें व्याकरण पढ़ना चाहिए।

उत्तर- 4(A) **प्रत्यय :-** ऐसे अव्यय / शब्दांश जो किसी धातु या संज्ञा के साथ जुड़कर उनका अर्थ या रूप भिन्न कर देते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं।

"प्रत्ययः प्रत्ययतऽनेन सः।"

अर्थात्,
जो शब्दांश शब्दों / धातुओं के पीछे जुड़कर उनका अर्थ बदल देते हैं वह प्रत्यय हैं।

उदाहरण →
गम् + अनीयर = गमनीय
राम + सु = रामः

प्रत्यय के भेद — पाणिनि मुनि के अनुसार, प्रत्यय चार प्रकार के होते हैं —

प्रत्यय	परिभाषा / अर्थ	उदाहरण
• तद्धित	ये प्रातिपदिक में लगते।	केश + वान = केशवान
• कृत (कृदन्त)	धातुओं में लगते हैं।	गम् + अनीयर = गमनीय
• सुप्	विभक्तियों में।	राम + सु = रामः
• तिङ्	• लकारों में।	पठ् + ति = पठति

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

08

उत्तर - 1 (I) कुराई →

~~कुरा + ई~~
~~कुरा + ई हलन्त्यम् से र् की इत्संज्ञा तथा तस्यलोपः से लोप~~

~~कुरा + ई~~ कुरा + आई
कुर् + आई यस्येति च से स्वर का लोप

~~कुराई~~ //

कुराई //

(खण्ड ब)

उत्तर - 4 महाभाष्यकार पतञ्जलि ने अपने महत्त्वपूर्ण, सर्वप्रसिद्ध एवं व्याकरणशास्त्र के महत्वपूर्ण ग्रन्थ में शब्द का लक्षण बताते हुए शब्दानुशासन के प्रयोजन को बताया है —

महर्षि के अनुसार शब्द की परिभाषा →

"प्रतीतपदार्थको लोके ध्वनि स शब्द इत्युच्यते।"

अर्थात्
लोक में पदार्थ की प्रतीति कराने वाली ध्वनि को 'शब्द' कहते हैं।

उदाहरण रूप में,
"शब्द कुरु",
"मा शब्दं कार्षी",
"शब्दकार्यं माणवक:"।

शब्दानुशासन के प्रयोजन :→

महाभाष्यकार पतञ्जलि ने शब्दों का अनुशासन करने के उपरान्त प्रयोजनों को वर्णित किया है।
वे कहते हैं कि
अब व्याकरणशास्त्र पढ़ने का प्रयोजन क्या है, अर्थात् उससे क्या लाभ है।
क्योंकि,
"प्रयोजनमनुद्दिश्य मन्दोऽपि न प्रवर्तते।"

महर्षि पतञ्जलि ने पाँच मुख्य प्रयोजन तथा 13 गौण प्रयोजन बताए हैं —

मुख्य प्रयोजन :— पाँच मुख्य प्रयोजन इस प्रकार हैं —

"रक्षोहागमलघ्वसन्देहा: ।"
अर्थात्,
रक्षा (वेदों की रक्षा), ऊह (विभक्तियों का विपरिणाम), आगम, लघु (सुगमता) और असन्दिग्ध (सन्देह रहितता) के लिए हमें व्याकरण शास्त्र का अध्ययन करना चाहिए।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

⑫ 10

1- रक्षा :- 'रक्षा' से आशय है - वेदों, शास्त्रों एवं भाषा की रक्षा।

"वेदानां रक्षार्थमध्येयं व्याकरणम्।"

अर्थात्
वेदों की रक्षा के लिए व्याकरण का अध्ययन करना चाहिए।

⟹ वेदों की रक्षा के लिए लोप, आगम और वर्णविकार का ज्ञान होना चाहिए।

- लोप -

"देवा अदुह्र"

इसमें 'दुह' धातु में 'झ' का 'अत्' आदेश होकर 'त्' का लोप हुआ।

- आगम -

"देवा अदुह्र"

'रुट्' का आगम 'बहुलं छन्दसि' से।

- वर्णविकार -

('ह' की विकृति 'भ' से)

जहार - जभार

उद्ग्राह - उद्ग्राभं

'हृग्रहोर्भ' सूत्र से 'ह' की विकृति 'भ' हो जाती है।

⟹ इस प्रकार जो लोप, आगम, वर्णविकार को जानता होगा वही वेद की रक्षा कर सकता है।

Paper Code

खण्ड 'क'

उत्तर-1 (A) महाभाष्यकार पतञ्जलि संस्कृत व्याकरण के प्रमुख व्याकरणाचार्य हैं। इन्होंने पाणिनि कृत 'अष्टाध्यायी' को सरल एवं स्पष्ट रूप देते हुए अपने महान ग्रन्थ "महाभाष्य" की रचना की।

जीवन - काल :- पतञ्जलि के विषय में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। कुछ विद्वानों के अनुसार उनका जन्म 150 ई. पू. शताब्दी में हुआ था।

जन्म स्थान :- पतञ्जलि मुनि का जन्म उत्तर-भारत के आस-पास के स्थान में हुआ था।

शिक्षा एवं विद्वता :- महाभाष्यकार पतञ्जलि ने व्याकरण का गहन अध्ययन करते हुए पाणिनि के 'अष्टाध्यायी' और कात्यायन मुनि के 'वार्तिक' पर अपना ग्रन्थ महाभाष्य लिखा। वे भाषा शास्त्र एवं तर्कशास्त्र के गहरे ज्ञाता था।

रचना :- महाभाष्यकार पतञ्जलि की प्रमुख कृति "महाभाष्य" है।

अन्य कुछ [illegible]राओं के अनुसार पातंजलि-योगसूत्र एवं पातञ्जलि-चरक प्रतिसंहिता भी रचनाएँ मानी

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

② 12

जाती है।

महाभाष्य का स्वरूप !—

• "महाभाष्य" पाणिनि की कृति "अष्टाध्यायी" और कात्यायन के "वार्तिकों" पर आधारित है।

• इसका विभाजन आह्निक के रूप में है।

• इसमें शब्द का ज्ञान, उसकी परिभाषा, शब्दार्थ का ज्ञान आदि का वर्णन मिलता है।

योगदान !— पतञ्जलि मुनि ने संस्कृत को एक वैज्ञानिक रूप प्रदान किया।
इनके महाभाष्य के कारण पाणिनीय व्याकरण को समझना आसान हुआ है।

निष्कर्ष !—

महर्षि पतञ्जलि एक ऐसे अद्वितीय विद्वान् थे जिन्होंने भाषा, ध्यान, आयुर्वेद — तीनों विषयों के साधन प्रदान किए।

'महाभाष्य' संस्कृत व्याकरण शास्त्र के महान् कृतियों में महत्वपूर्ण माना जाता है। जिसके आधार पर संस्कृत का ज्ञान सरलता स्पष्टता पूर्वक प्राप्त किया जा सकता है।

पाणिनि — कात्यायन — पतञ्जलि इन तीनों को "संस्कृत व्याकरण शास्त्र का त्रिमुनि" कहा जाता है।

Paper Code

M. A. [illegible] Sem Sanskrit

FB-01 (R)

Paper code A020902T

04/12

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

15 (13)

2- ऊह →

'ऊह' का अर्थ है - विभक्तियों के विपरिणाम से।

वेदों में सभी विभक्तियों एवं लिंगों के लिए मंत्रों नहीं है। ऋत्विज को यथोचित मंत्रों का प्रयोग करने के लिए व्याकरण का ज्ञान होना आवश्यक है।

उदाहरण के रूप में,

"अग्नये ! त्वां जुष्टं निर्वपामिति" का सूर्याये न करें अर्थात् 'सूर्याय ! त्वां जुष्टं निर्वपामिति' करें।

इसलिए व्याकरण का ज्ञान होना आवश्यक है।

3- प्रधान :-

व्याकरण को षड् अंगों (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छन्द, ज्योतिष, निरुक्त) में प्रमुख या प्रधान माना गया है।

"व्याकरणं वेदानां मुखं।"

यह कहा जाता है कि,

प्रधान के लिए किया गया कार्य हमेशा फलदायक होता है।

अतः हमें व्याकरण पढ़ना चाहिए।

4- लघु :-

व्याकरण से अधिक लघु (सुगमता) का मार्ग शब्दों के अध्ययन करने का कोई दूसरा नहीं है।

इसलिए,

'लघ्वर्थंध्येयम् व्याकरणम्।'

Paper Code

① 46

5- असन्देह।-
संदेह का अर्थ है- भ्रम और असन्देह का अर्थ है- सन्देह का ध्वंस।
जो वैयाकरण होते हैं उन्हें संदेह होता ही नहीं है।

इसलिए, सन्देहरहितता के लिए व्याकरण का अध्ययन करना चाहिए।
"असन्देहार्थमध्येयं व्याकरणम्।"

उदाहरण -
स्थूल पृषती।

खण्ड 'स'

उत्तर-6 परिचय।-
संस्कृत के व्याकरणाचार्यों में कात्यायन मुनि का नाम अत्यन्त सम्मान के लिया जाता है। उन्होंने पाणिनि कृत अष्टाध्यायी पर लगभग 4000 वार्तिकों की रचना की।

पाणिनि- कात्यायन- पतञ्जलि को संस्कृत व्याकरण का 'त्रिमुनि' कहा जाता है।

जन्मकाल।-
कात्यायन मुनि के जन्मकाल-

Do Not Write anything in this Portion

आदि के विषय में पर्याप्त मतभेद हैं।

• कुछ विद्वानों के अनुसार वे 2री शताब्दी ई. पू. के माने जाते हैं।

• वे मौर्यसम्राट पुष्यमित्र शुंग के कालीन थे।

जन्मस्थान :-

• कात्यायन का जन्मस्थान महाराष्ट्र के सालातुरा जिले में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था।

• बाद में वे वाराणसी में आकर बस गए।

शिक्षा :- महर्षि कात्यायन ने व्याकरण, मीमांसा एवं वेद का गहन अध्ययन प्राप्त किया। तत्पश्चात् उन्होंने पाणिनीय व्याकरण पर अपने वार्तिक लिखे।

कृति :- कात्यायन मुनि की कृति 'वार्तिक' है –

• 'वार्तिक' का अर्थ है – किसी सूत्र में छूटी हुयी, न कही या अनावश्यक बात को स्पष्ट करना।

• इन्होंने पाणिनी के सूत्रों को सरल रूप में प्रस्तुत किया।

• वार्तिक की रचना करने के कारण इन्हें 'वार्तिककार' कहा गया।

Paper Code

(16) 18

Do Not Write anything in this Portion

योगदान।-

• इन्होंने व्याकरण को वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया।

• इनके ग्रन्थ में तर्क आदि का भी वर्णन है।

निष्कर्ष:-

महामुनि कात्यायन संस्कृत के महान व्याकरणाचार्य थे। जिनकी रचना ने पतञ्जलि के महाभाष्य के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

Paper Code

Paper Code

20

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion